पवत्रि क़ुरआन का संरक्षण

ववरिण: जसि तरह क़ुरआन को संरक्षति और संचारति कयिा गया है वैसा दुनयिा के कसिी अन्य धार्मकि पाठ को नहीं कयिा गया। इसे मुख्य रूप से याद कर के और लखिति रूप में संचारति कयिा गया है। इस पाठ में इसका प्रमाण है।

द्वारा Imam Mufti
प्रकाशति हुआ 08 Nov 2022 - अंतमि बार संशोधति 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >पवत्रि क़ुरआन > क़ुरआन के समीप आना

उद्देश्य

- यह जानना कि बनिा कसिी बदलाव के और सावधानीपूर्वक संरक्षण और संचरण के कारण पवत्रि क़ुरआन अपने मूल रूप में है।
- इसके संरक्षण और संचरण के साक्ष्य के माध्यम से पवत्रि क़ुरआन में वशि्वास और दृढ़ वशि्वास स्थापति करना।

अरबी शब्द

- ?????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, कयिा या करने को कहा।

क़ुरआन और पैगंबर मुहम्मद की सुन्नत इस्लाम के दो दैवीय रूप से प्रकट स्रोत हैं, और इस्लामी वशि्वास और पूजा इन पर आधारति है।

कोई सोच सकता है की 'नए मुसलमान के लिए इस वषिय के बारे में जानना क्यों ज़रूरी है?' पहला, क्योंकि बुनयिादी जानकारी जानने से उसका वशि्वास और आत्मवशि्वास बढ़ेगा कि वह सीधे रास्ते पर है। उसे लगेगा कि उसका धर्म केवल दावों पर नहीं, बल्कि उस रहस्योद्घाटन पर बना है जसिका अल्लाह ने वादा कयिा था और वास्तव में संरक्षति है। दूसरा, बुनयिादी ज्ञान होने से व्यक्ति के सामने आने वाली कसिी भी शंका से प्रभावति होने की संभावना कम होती है।

अल्लाह कहता है:

> **"वास्तव में, हमने ही ये शक्षिा (क़ुरआन) उतारी है और हम ही इसके रक्षक है।" (क़ुरआन 15:9)**

आइए देखें कि इसे कैसे सदयिों से संरक्षति कयिा गया है।

जसि तरह क़ुरआन को संरक्षति और संचारति कयिा गया है वैसा दुनयिा के कसिी अन्य धार्मकि पाठ को नहीं कयिा गया। इसे मुख्य रूप से याद कर के और लखिति रूप में संचारति कयिा गया है जैसा की हम बताएंगे।

साक्ष्य कि क़ुरआन लखिति में संरक्षति है

उस समय प्रटिंगि प्रेस नहीं थे। एक प्रतलिपि बनाने के लिए पुस्तकों को वशिेष लेखकों द्वारा लखिा

जाता था। पैगंबर ने विशेष शास्त्रियों को शब्द दर शब्द क़ुरआन बताया था।[1] पैगंबर का 632 ईस्वी में निधन हो गया। बाद में, मुसलमानों के पहले नेता अबू बक्र ने लेखकों की मूल लिपियों को एक किताब में इकट्ठा किया, और फिर कुछ समय बाद, जब मुस्लिम साम्राज्य पूर्व से पश्चिम तक फैला, पैगंबर के दामाद और तीसरे खलीफा उस्मान ने लगभग बीस साल बाद मूल क़ुरआन की पांच प्रतियां बनाने और मुस्लिम दुनिया के सभी हिस्सों में वितरित करने का आदेश दिया।[2]

आज हमारे पास क़ुरआन की तीन पांडुलिपियां हैं जो पैगंबर के दामाद और खलीफा उस्मान से जुड़ी हैं।

(1) ताशकंद, उज्बेकिस्तान में स्थित समरकंद पांडुलिपि। यह एक चर्मपत्र पर लिखा है जो बारहसिंघा का है। संयुक्त राष्ट्र की एक शाखा, मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड प्रोग्राम, यूनेस्को के अनुसार, '*[illegible]*'[3]

एक जर्मन विद्वान श्री वॉन डेनफर पांडुलिपि के बारे में लिखते हैं:

"यह इमाम पांडुलिपि (खुद उस्मान द्वारा रखी गई प्रति के लिए इस्तेमाल किया गया नाम) या उस्मान के समय बनाई गई अन्य प्रतियों में से एक हो सकता है।"[4]

चित्र 1: उज्बेकिस्तान के मुस्लिम बोर्ड के पास मौजूद यह पांडुलिपि क़ुरआन का सबसे पुराना लिखित संस्करण है। यह निश्चित संस्करण है, जिसे उस्मान के मुशफ के रूप में जाना जाता है, जो अन्य सभी संस्करणों से ऊपर है। यह छवि मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर, यूनेस्को के सौजन्य से।

चत्रि 2: उस्मान का पवत्रि क़ुरआन कांच के फ्रेम में। यह छवि मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजस्टिर, यूनेस्को के सौजन्य से।

(2) टोपकापी पैलेस संग्रहालय।[5]

(3) तीसरी पांडुलपि अल-हुसैन मस्जदि, काहरिा, मस्रि में रखी गई है और इसे नीचे देख सकते हैं।

चत्रि 3: अल-हुसैन मस्जदि, काहरिा, मस्रि में एक प्रारंभकि क़ुरआन की पांडुलपि। छवि http://www.islamic-awareness.org के सौजन्य से।

श्री वॉन डेनफर इसके बारे में लखिते हैं:

"...इस बात की बहुत संभावना है कि इसे उस्मान के मुस्हफ से कॉपी कयिा गया हो।"[6]

नष्किर्ष

इस भाग को श्री वॉन डेनफ़र की टप्पिणयिों के साथ समाप्त करना सबसे अच्छा होगा:

"दूसरे शब्दों में, क़ुरआन की दो प्रतियां जो मूल रूप से खलीफा उस्मान के समय में तैयार की गई थीं आज भी हमारे लिए उपलब्ध हैं और जो चाहे इनके पाठ और व्यवस्था की तुलना क़ुरआन की किसी भी अन्य प्रति से कर सकता है, चाहे वह प्रिंट या हस्तलेखन में हो या किसी भी स्थान या समय का हो। वे समान पाए जाएंगे।"[7]

साक्ष्य की क़ुरआन कंठस्थ द्वारा संरक्षिति है

अल्लाह ने क़ुरआन को याद रखना आसान बना दिया है:

> **"और हमने सरल कर दिया है क़ुरआन को शिक्षा के लिए। तो क्या, है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?" (क़ुरआन 54:17)**

जिस सहजता से क़ुरआन को कंठस्थ किया जाता है, वह अतुलनीय है। दुनिया में एक भी ग्रंथ या धार्मिक ग्रंथ ऐसा नहीं है जिसे याद करना इतना आसान हो, यहां तक कि गैर-अरब भी क़ुरआन को आसानी से याद कर सकते हैं। शायद ही लोग पूरी बाइबल को कंठस्थ कर पाते हैं, जबकि पूरा क़ुरआन लगभग हर इस्लामी विद्वान और लाखों आम मुसलमानों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी कंठस्थ किया जाता है। लगभग हर मुसलमान क़ुरआन के कुछ हिस्से को प्रार्थनाओं में पढ़ने के लिए याद करता है। पारंपरिक रूप से क़ुरआन में महारत हासिल करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाते हैं:

पहला, क़ुरआन को बच्चे, पुरुष और महिलाएं काफी कम उम्र में याद करते हैं। इस प्रक्रिया में आमतौर पर 2-4 साल लगते हैं।

दूसरा, केवल क़ुरआन को याद करना ही काफी नहीं है। क़ुरआन सिर्फ शब्द नहीं है, बल्कि ध्वनि और अर्थ भी है। क़ुरआन को ठीक उसी तरह से पढ़ना चाहिए जिस तरह से इसे 1400 साल पहले अल्लाह के पैगंबर ने पढ़ा था। इसे उसी तरह से पढ़ना चाहिए जिस तरह से इसे अल्लाह ने प्रकट किया था। 1400 साल पुरानी एक ठोस परंपरा के तहत एक गुरु के अधीन रह कर इसके पाठ (तजवीद) मे महारत हासिल कि जाती है, एक ऐसी 'अटूट श्रृंखला' जो अल्लाह के पैगंबर के समय से चली आ रही है। इस प्रक्रिया में आमतौर पर 3-6 साल लगते हैं। महारत हासिल करने और त्रुटियों की जांच के बाद, एक व्यक्ति को एक औपचारिक लाइसेंस (इजाज़ा) दिया जाता है यह प्रमाणित करते हुए कि उसने पाठ के नियमों में महारत हासिल कर ली है और अब वह क़ुरआन को उसी तरह से पढ़ सकता है जिस तरह से इसे अल्लाह के पैगंबर मुहम्मद ने पढ़ा था।

एक गैर-मुस्लिम प्राच्यविद् एटी वेल्च लिखते हैं:

"मुसलमानों के लिए क़ुरआन सामान्य पश्चिमी अर्थों में शास्त्र या पवित्र साहित्य से कहीं अधिक है। सदियों से इसका प्राथमिक महत्व इसके मौखिक रूप में रहा है, लगभग बीस वर्षों की अवधि में मुहम्मद द्वारा अपने अनुयायियों के लिए "पाठ" के रूप में, जिस रूप में यह पहली बार प्रकट हुआ था... रहस्योद्घाटन को मुहम्मद के कुछ अनुयायियों द्वारा उनके जीवनकाल के दौरान याद किया गया था, और एक मौखिक परंपरा जो इस प्रकार स्थापित की गई थी, इसका एक निरंतर इतिहास रहा है, कुछ मायनों में लिखित क़ुरआन से अलग और श्रेष्ठ... सदियों से पूरे क़ुरआन की मौखिक परंपरा को पेशेवर पाठक (क़ुर्रा) द्वारा बनाए रखा गया है। कुछ समय पहले तक, पश्चिम में क़ुरआन के पाठ के महत्व को शायद ही कभी पूरी तरह से सराहा गया हो।"[8]

न केवल क़ुरआन के शब्दों को संरक्षित किया गया है, बल्कि उन शब्दों की मूल ध्वनियों को भी संरक्षित किया गया है। किसी अन्य धार्मिक पाठ को इस तरह से संरक्षित नहीं किया गया है - एक ऐसा दावा जिसे कोई भी वस्तुनिष्ठ पाठक अपने लिए सत्यापित कर सकता है। इस प्रकार, क़ुरआन सदियों से अपने संरक्षण के तरीके में अद्वितीय है जैसा कि स्वयं पैगंबर ने बताया और अल्लाह ने वादा किया था।

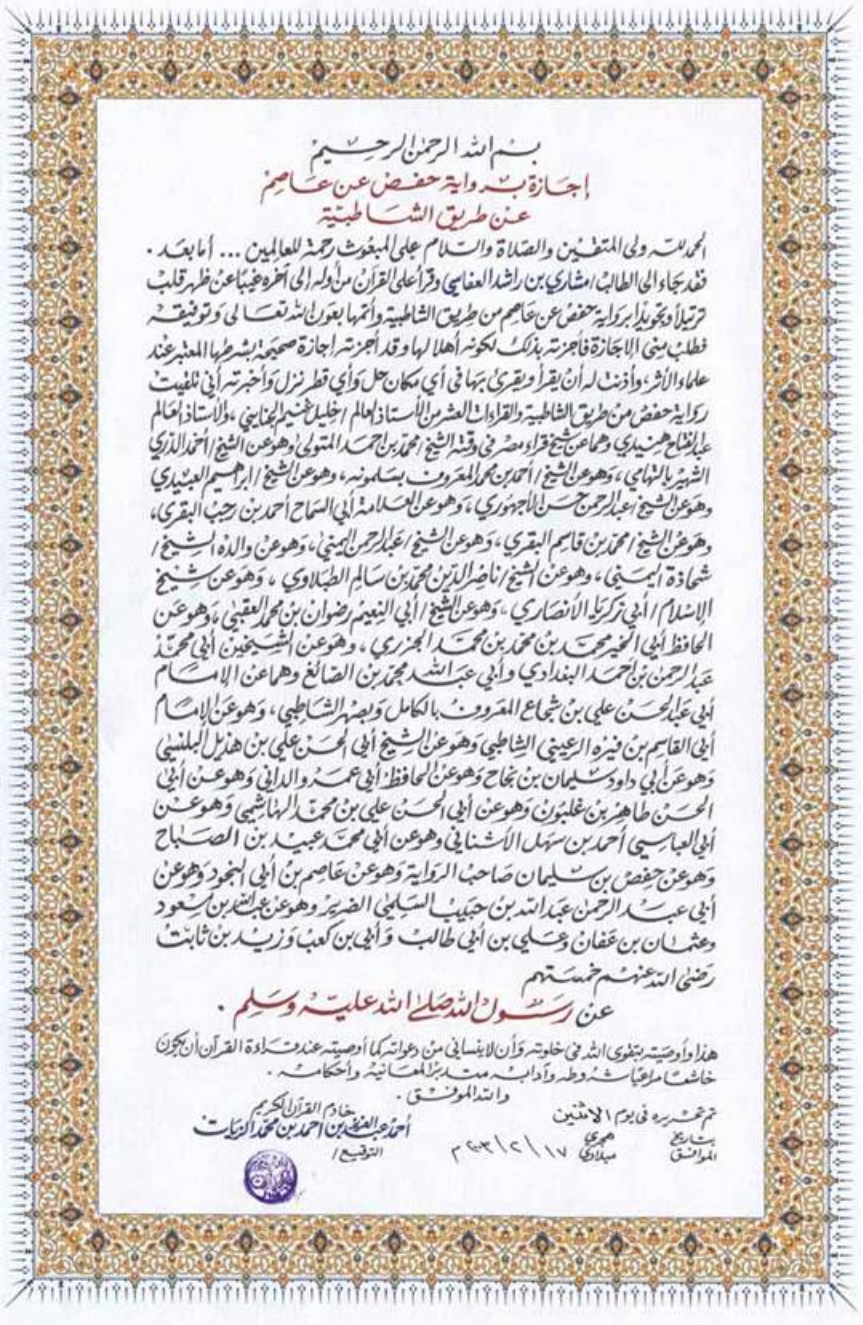

بسم الله الرحمن الرحيم
إجازة بـرواية حفص عن عاصم
عن طريق الشاطبية

الحمد لله ولي المتقين والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين ... أما بعد .
فقد جاء إلى الطالب / مشاري بن راشد العفاسي وقرأ على القرآن من أوله إلى آخره غيبا عن ظهر قلب
ترتيلا وتجويدا برواية حفص عن عاصم من طريق الشاطبية وأتمها بعون الله تعالى وتوفيقه
فطلب مني الإجازة فأجزته بذلك لكونه أهلا لها وقد أجزته إجازة صحيحة بشرطها المعتبر عند
علماء الأثر، وأذنت له أن يقرأ ويقرئ بها في أي مكان حل وأي قطر نزل وأخبرته أني تلقيت
رواية حفص من طريق الشاطبية والقراءات العشر من الأستاذ العالم / خليل غنيم الجنايني، والأستاذ العالم
عبد الفتاح هنيدي وهما عن شيخ قراء مصر في وقته الشيخ / محمد بن أحمد المتولي وهو عن الشيخ / أحمد الدري
الشهير بالتهامي، وهو عن الشيخ / أحمد بن محمد المعروف بسلمونه، وهو عن الشيخ / ابراهيم العبيدي
وهو عن الشيخ / عبد الرحمن حسن الأجهوري، وهو عن العلامة أبي السماح أحمد بن رجب البقري،
وهو عن الشيخ / محمد بن قاسم البقري، وهو عن الشيخ / عبد الرحمن اليمني، وهو عن والده الشيخ /
شحاذة اليمني، وهو عن الشيخ / ناصر الدين محمد بن سالم الطبلاوي، وهو عن شيخ
الإسلام / أبي زكريا الأنصاري، وهو عن الشيخ / أبي النعيم رضوان بن محمد العقبي، وهو عن
الحافظ أبي الخير محمد بن محمد بن محمد الجزري، وهو عن الشيخين أبي محمد
عبد الرحمن بن أحمد البغدادي وأبي عبد الله محمد بن الصائغ وهما عن الإمام
أبي عبد الحسن علي بن شجاع المعروف بالكامل وبصهر الشاطبي، وهو عن الإمام
أبي القاسم بن فيره الرعيني الشاطبي وهو عن الشيخ أبي الحسن علي بن هذيل البلنسي
وهو عن أبي داود سليمان بن نجاح وهو عن الحافظ أبي عمرو الداني وهو عن أبي
الحسن طاهر بن غلبون وهو عن أبي الحسن علي بن محمد الهاشمي وهو عن
أبي العباس أحمد بن سهل الأشناني وهو عن أبي محمد عبيد بن الصباح
وهو عن حفص بن سليمان صاحب الرواية وهو عن عاصم بن أبي النجود وهو عن
أبي عبد الرحمن عبد الله بن حبيب السلمي الضرير وهو عن عبد الله بن مسعود
وعثمان بن عفان وعلي بن أبي طالب وأبي بن كعب وزيد بن ثابت
رضي الله عنهم خمستهم
عن رسول الله صلى الله عليه وسلم .

هذا وأوصيته بتقوى الله في خلوته وأن لا ينساني من دعواته كما أوصيته عند قراءة القرآن أن يكون
خاشعا مراعيا خشوعه وآدابه متدبرا لمعانيه وأحكامه .
والله الموفق .

خادم القرآن الكريم
أحمد عبد الفتاح بن أحمد بن محمد الزيات
التوقيع /

تم تحريره في يوم الاثنين
بتاريخ الموافق هجري ميلادي ١٧/٢/٢٠٠٢م

चित्र 4: यह छवि एक विशिष्ट लाइसेंस (इजाज़ा) है जो क़ुरआन के पाठ को पूरा याद करने के बाद दिया जाता है, जो इस्लाम के पैगंबर के समय से प्रशिक्षकों की एक अटूट श्रृंखला को प्रमाणित करता है। उपरोक्त छवि कारी मिशारी बिन राशिद अल-अफसी का इजाज़ा प्रमाण पत्र है, जो कुवैत के जाने-माने क़ुरआन पाठक हैं, जिन्हें शेख अहमद अल-ज़ियायत द्वारा जारी किया गया है। छवि http://www.alafasy.com के सौजन्य से।

टिप्पणी

फुटनोट:

[1] एक जर्मन विद्वान अहमद वॉन डेनफर द्वारा 'उलुम अल-क़ुरआन', पृष्ठ 43।

[2] गहन विश्लेषण के लिए, कृपया ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के विद्वान डॉ. मुस्तफा अल-आज़मी द्वारा एक उत्कृष्ट कार्य देखें, "द हिस्ट्री ऑफ कुरानिक टेक्स्ट फ्रॉम रिवीलेशन टू कंपाइलेशन: ए कम्पेरेटिव स्टडी विद द ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट्स"।

[3] http://www.unesco.org.

आई. मेंडेलसोन, "द कोलंबिया यूनिवर्सिटी कॉपी ऑफ द समरकंद कुफिक कुरान", द मोस्लेम वर्ल्ड, 1940, पृष्ठ 357-358.

ए. जेफ़री और आई. मेंडेलसोन, "द ऑर्थोग्राफ़ी ऑफ़ द समरकंद कुरान कोडेक्स", जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी, 1942, संस्करण 62, पृष्ठ 175-195।

[4] अहमद वॉन डेनफ़र द्वारा लिखित 'उलुम अल-कुरान', पृष्ठ 63।

[5] संग्रहालय की वेबसाइट http://www.ee.bilkent.edu.tr/%7Ehistory/topkapi.html

[6] अहमद वॉन डेनफ़र द्वारा लिखित 'उलुम अल-कुरान', पृष्ठ 62।

[7] अहमद वॉन डेनफ़र द्वारा लिखित 'उलुम अल-कुरान', पृष्ठ 64।

[8] इस्लाम का विश्वकोश, 'दी क़ुरआन इन मुस्लिम लाइफ एंड थॉट।'

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/54

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan